पखावज तथा तबला की वादन शैली एवं वादन विधि का तुलनात्मक वर्णन

बनावट के आधार पर दोनों वाद्यों के वादन शैली एवं वादन विधि में अन्तर

पखावज तथा तबला दोनों ही उत्तर भारतीय संगीत और विशेषकर शास्त्रीय संगीत के सबसे प्रमुख अवनद्ध वाद्य है। चूंकि किसी भी वाद्य की वादन शैली तथा वादन विधि–उस वाद्य की बनावट पर निर्भर करती है अतएव सन्दर्भ हेतु दोनों वाद्यों की रचना सम्बन्धी संक्षिप्त परिचय देना उचित होगा।

पखावज की रचना त्रिपुष्कर के आंकिक वाद्य के समान यथा मृदंग के समान ही होती है केवल यह वाद्य (पखावज) मृदंग से आकार में बड़ा होता है तथा ऐसा कहा जाता है कि मृदंग अपने शाब्दिक अर्थानुसार मिट्टी से बना होता है जबकि पखावज शीशम, आम आदि वृक्षों की लकड़ी से बनता है। इसका मृदंग के समान एक ही अंग होता है तथा बीच में से खोखला होता है। इसकी लम्बाई 2½ और 3 फीट के मध्य होती है मुख पर लकड़ी की मोटाई लगभग ½ इंच होती है दाँये मुख की अपेक्षा बांये मुख का व्यास अधिक बड़ा होता है दाँये तथा बाँये दोनों मुखों पर 3 परतों में मुख की व्यास से बड़ा चमड़ा जो बारीक वादियों से गजरे में फँसा रहता है पुड़ी बनाकर मुखों पर रखा जाता है। इन दोनों पुड़ियों को, गजरों के छेदों द्वारा बद्धी डालकर दोनों मुखों पर कस दिया जाता है पुड़ी बनाते समय ऊपरी चमड़े की परत को मुख के व्यास से लगभग 1 इंच छोड़कर गोलाकार रूप में बीच में से काट दिया जाता है। नीचे के चमड़े को गजरे की किनार छोड़कर बाकी काट दिया जाता है। इस प्रकार चमड़े की ऊपरी परत की जो पट्टी लगभग 1 इंच की बचती है उसे चाँटी कहा जाता है। दाँये मुख का चमड़ा बाँये मुख के चमड़े से नरम होता है। दाँये पुड़ी के चमड़े के बीचो बीच मसाले से बनी स्याही लगाई जाती है। बाँये मुख के चमड़े के बीचों-बीच वादन से पूर्व (स्याही से बड़े आकार में) कच्चा

Scanned with CamScanner

आटा लगाया जाता है। बद्धियों के नीचे लकड़ी के गट्टे फँसा दिए जाते हैं जो स्वर को ऊँचा तथा नीचा करने के काम आते है। पखावज साधारणतः गायक या वादक के स्वर में मिलाई जाती है। पखावज का आकार तथा मुखों के व्यास में स्वर के अनुसार अन्तर पाया जाता है। बाँया मुख खर्ज के स्वर में मिलाने के लिए आटे की परत पतली या मोटी की जाती है।

पखावज की शैली उसके बनावट के अनुसार ही होती है। पखावज का एक ही अंग तथा बीच में से खोखला होने के कारण एक मुख पर वादन करने से उत्पन्न ध्वनि की प्रतिध्वनि दूसरे मुख के अंदर से प्राप्त होती है। इस कारण पखावज में उत्पन्न होने वाली ध्वनि गम्भीर होती है। पखावज की बनावट के कारण ही उसके बाँये मुख पर ढोलक समान धुमकदार ध्वनि निकालना सम्भव नहीं होता। अतः पखावज का वादन खुले बोलों से ही अधिक होता है। वैसे कुछ बन्द बोल भी पखावज पर बनाये जाते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि पखावज की रचना के कारण इसकी वादन की शैली खुले बोलो की होती है।

16वी सदी से ही उतर भारतीय संगीत में ध्रुपद गायन का उल्लेख मिलता है। अकबर बादशाह के समकालीन ग्वालियर नरेश मानसिंह तोमर को ध्रुपद गायन शैली के आविष्कार का श्रेय दिया जाता है। वस्तुतः यही ध्रुपद गायन शैली पखावज के विकास का कारण बनी। ध्रुपद गायन संगति के लिए मृदंग का परिष्कृत रूप ही पखावज कहा जाने लगा। पखावज वाद्य अपने शाब्दिक अर्थानुसार पख यानि पखुवा या हाथ, आवज यानि आवाज अर्थात् हाथ के दम या आधार से जिस वाद्य की ध्वनि उत्पन्न की जाती हो वह पखावज है। अतः ध्रुपद गायन की संगति के लिए पखावज वाद्य की रचना की गई।

तबला—तबला वाद्य के निर्माण का आधार भरतकालीन त्रिपुष्कर वाद्य के (2 अवनद्ध वाद्य) उर्ध्वक तथा आलिंग्य वाद्य हो सकते हैं ऐसा माना जाता है क्योंकि तबला (दाँया व बाँया) की तरह उर्ध्वक तथा आलिंग्य भी खड़े रखकर बजाये जाते हैं। तबला वाद्य के दो अंग होते हैं—एक दाँया, दूसरा बाँया। दायें का अंग आमतौर पर शीशम, आम, खैर तथा विजयसाल आदि वृक्षों की लकड़ी से बनाया जाता है। प्रायः इस वाद्य की ऊँचाई 1 (एक) फुट होती है। स्वर के अनुसार ऊँचाई तथा चौड़ाई (व्यास) में अन्तर रहता है। लकड़ी को खोखला कर एक तरफ मुँह खुला रखा जाता है। बाँये का अंग सुपाड़ी के आकार का होता है। इसके भी एक मुख होता है यह प्रायः माटी तथा धातु से बने होते हैं। बाँये तथा दायें के मुख पर चमड़े से मढ़ी हुई पुड़ी लगाई जाती है। प्रत्येक पुड़ी में लगे 3 चमड़े के पर्तों में से ऊपर की तथा नीचे की पर्त को किनार से क्रमशः 2 तथा 1 इंच छोड़कर गोलाकार काट लिया जाता है। ऊपर के चमड़े की तथा नीचे के चमड़े को 1 इंच किनार सहित उस गजरे में गूँथकर गजरे के छेदों में से बद्धी डालकर, तली में लगे कड़े में फँसाकर

Scanned with CamScanner

अंग से कस दिया जाता है। दोनों पुड़ियों पर मसाले से बनी स्याही लगा दी जाती है (दाये के बीचो बीच तथा बाँये में थोड़ा हटकर)। दाँये के पूड़ी का चमड़ा बकरी का तथा बाँये का बकरे का होता है।

इस प्रकार तबला दो अंगों वाला एक मुखी वाद्य है। इसकी रचना के अनुसार तथा इसके रखरखाव के अनुसार इसमें थाप की अपेक्षा अंगुली से वादन किया जाता है। चूँकि तबले का वादन थाप की अपेक्षा अंगुली से किया जाता है। अतएव इस वाद्य पर निकलने वाली ध्वनि गम्भीर तथा अधिक गूँज वाली नहीं होती हैं इस प्रकार दाँये तबले पर अंगुली द्वारा जो बोल बजाये जाते है वे बन्द बोल कहलाते हैं तथा बाँये तबले पर ढोलक समान घुमकदार बोल को हथेली द्वारा घिसकर आसानी से निकाला जा सकता है तबले पर बोलो को बजाने के बाद जो ध्वनि उत्पन्न होती है वह वस्तुतः मृदंग वादन के पश्चात् उत्पन्न होने वाली ध्वनि की अपेक्षा काफी कम तथा नीची होती है जिसके कारण ही तबले के बोलो को बन्द बोल कहे जाने की प्रथा है।

दोनों वाद्यों की वादन शैली में अन्तर

(1) तबला वाद्य का उर्ध्वमुखी होना तथा पखावज का आंकिक के समान दो मुखी होना तथा इसके साथ ही साथ दोनों वाद्यों की बनावट के कारण ही वस्तुतः इन वाद्यों की वादन शैली में अन्तर देखने को मिलता है।

(2) पखावज तथा तबला दोनों वाद्यो का मुख्य प्रयोग यद्धपि संगीत में संगत करने हेतु किया जाता है तथा इस कारण दोनों वाद्यों में ठेका धारण किया जाता है तथापि वाद्यों की बनावट, वादन शैली में भिन्नता होने के कारण ताल की समान मात्रा होने पर भी दोनों वाद्यों पर बजाये जाने वाले ठेके अलग-अलग वर्णों से निर्मित होते हैं यथा एकताल चारताल दोनों तालों की मात्रा 12 है तथापि चारताल खुले बोलो से युक्त होने के कारण पखावज पर वादन हेतु तथा एकताल बन्द बोलों से युक्त होने के कारण तबला पर वादन हेतु प्रयोग की जाती है।

(3) इसी प्रकार दोनों वाद्यों में सोलो वादन में प्रयोग की जाने वाली रचनाओं में भी काफी असमानता दिखाई देती है यथा तबले पर जहाँ पेशकारा, कायदा, रेला आदि बजाये जाने का चलन है वही पखावज में गते, परने, पड़ान आदि बजाने की परिपाटी है। यहाँ एक तथ्य स्पष्ट कर देना आवश्यक है वह यह कि तबले के सोलो वादन में बजायी जाने वाली सामग्री (पेशकारा, कायदा, रेला) को जहाँ दो भागों में बाँटकर ताली दर्शक तथा खाली दर्शक वर्णों से उन्हें स्पष्ट किया जाता है वही पखावज के विस्तृत (सोलो) वादन में बजाई जाने वाली सामग्री (गते, परने, पड़ान) को ताली दर्शक व खाली दर्शक बोलो से स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

(4) यद्धपि तबले पर बजाये जाने वाले वर्णों का आधार पखावज के वर्ण

Scanned with CamScanner

ही है तथापि तबले के वादन शैली के आधार पर वर्णों के उच्चारण तथा निकास में अन्तर प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ता है तबला बन्द बोलो के प्रधान्यवाला वाद्य है तथा पखावज खुले बोलों के प्रधान्यवाला वाद्य है।

तबले तथा पखावज पर बजाये जाने वाले वर्ण तथा पाटाक्षरों की वादन विधि में अन्तर–यहाँ पर तर्जनी को पहली अंगुली मध्यमिका को दूसरी अंगुली अनामिका के लिए तीसरी तथा कनिष्ठका के लिए चौथी अंगुली का उल्लेख किया जाएगा।

तबला	पखावज
1. दाहिने तबले पर 'ता' वर्ण बजाने हेतु वादक को कनिष्ठका तथा अनामिका अंगुली को तबले पर हल्के वजन से रखना होगा तथा मध्यमिका को ऊपर उठाना होगा पहली अंगुली अर्थात् तर्जनी से चॉटी पर प्रहार द्वारा ता वर्ण को निकाला जाता है परन्तु 'ता' वर्ण के निकास में तर्जनी अंगुली को चॉटी पर प्रहार के बाद तुरन्त उठा लिया जाता है।	जबकि पखावज पर 'ता' वर्ण के निकास हेतु-पखावज के दाँये भाग में हाथ की चारों अंगुलियों को जोड़कर हथेली के निचले हिस्से से स्याही के ऊपरी भाग में हथेली को उठाते हुए खुला प्रहार करे तो 'ता' वर्ण की ध्वनि उत्पन्न होगी।
2. दि–जब दाहिने हाथ की चारों अंगुलियों को जोड़कर स्याही के मध्य भाग में खुला प्रहार करेंगे तो 'दि' वर्ण की ध्वनि निकलेगी।	इसमें भी जब पखावज के दाये मुख पर हाथ की चारो अंगुलियों को जोड़कर स्याही के मध्य में खुला प्रहार करेंगे तो 'दि' वर्ण की ध्वनि उत्पन्न होगी।
3. ना–दाहिने तबले पर 'ना' वर्ण का निकास 'ता' के समान ही होता है केवल अन्तर यह होता है कि ना 'वर्ण' के निकास में तर्जनी अंगुली (पहली अंगुली) चांटी पर क्षणभर के लिए चिपक जाती है।	पखावज के दाये मुख पर जब पहली अंगुली (तर्जनी) से चाँटी के मध्य भाग से थोड़ा ऊपरी भाग में प्रहार किया जाए तो 'ना' वर्ण का निकास सम्भव होता है।
4. तिं–दाहिनें तबले की पुड़ी पर जब चॉटी और स्याही के बीच लव के भाग में तर्जनी (पहली) अंगुली से खुला प्रहार करने पर 'तिं' वर्ण की	पखावज में 'ति' वर्ण का वादन पूर्णतया 'दिं' के समान ही होता है।

Scanned with CamScanner

तबला	पखावज
ध्वनि निकलेगी। किन्तु 'तिं' वर्ण के निकास में तर्जनी अंगुली को प्रहार के पश्चात् तत्काल ऊपर उठा लेना चाहिए।	
5. ति या ते—दाहिने तबले पर स्याही के बीचोबीच मध्यमा अंगुली के अग्र भाग से दबा प्रहार करने पर 'ति' या 'ते' वर्ण निकाला जाता है। बाज के अनुसार 'ति' या 'ते' के वादन हेतु मध्यमिका के स्थान पर मध्यमिका, अनामिका व कनिष्ठका अथवा मध्यमिका एवं अनामिका अंगुली का प्रयोग किया जाता है।	पखावज के दाये भाग में स्याही के बीचोबीच अनामिका और मध्यमिका अंगुली से दबा प्रहार करने पर 'ति' या 'ते' वर्ण का निकास सम्भव होता है।
6. टि या टे या रे या र—दाँये तबले की स्याही के बीचों बीच जब मध्यमिका के स्थान पर तर्जनी अंगुली से दबा प्रहार किया जाये तो 'टि' या 'टे' या 'रे' या 'र' वर्ण की ध्वनि उत्पन्न होगी। चूँकि दोनों ध्वनियाँ (तिट) समान है अतएव तिरकिट वादन में ट वर्ण के वादन हेतु मध्यमिका अंगुली का प्रयोग मान्य है।	पखावज में ति या ते के समान ही किन्तु तर्जनी (पहली) अंगुली के प्रहार से 'टि' या 'टे' या 'रे' या 'र' वर्ण निकाला जाता है।
7. धे या गे—बाँये तबले पर बाये हाथ की हथेली के निचले भाग को स्याही के निचले भाग में रखते हुए जब तर्जनी और मध्यमिका अंगुली से गोट और स्याही के ऊपरी भाग के बीच मैदानी भाग पर अन्दर की ओर खींचते हुए खुला प्रहार किया जाये तो 'धे' या 'गे' वर्ण की ध्वनि उत्पन्न होगी।	पखावज के बाँयी पुड़ी पर बीच में लगे आटे के ऊपरी भाग में बाँये हाथ के पंजे से खुला प्रहार करने पर 'धे' या 'गे' वर्ण की ध्वनि निकलेगी।

Scanned with CamScanner

तबला	पखावज
8. कि क या कत्—बाँये तबले की पुड़ी पर जब हथेली से धीमा तथा बन्द प्रहार करने पर उत्पन्न ध्वनि 'कि' या 'क' की होगी किन्तु जब वही थाप थोड़ी जोर से होगी तो उसे कत् कहेंगे। कभी-कभी दाँये तबले की स्याही पर दाँये हाथ की चारों अंगुलियों के बन्द आघात से कत् वर्ण का वादन किया जाता है।	इसी प्रकार जब पखावज के बाये भाग में आटे के ऊपर बाँई हथेली द्वारा बन्द प्रहार कर जो ध्वनि निकाली जाती है उसे 'क', 'कि' या 'कत्' कहा जाता है।
9. 'धा'—जब दाहिने तबले पर ता या ना वर्ण तथा बाँये तबले पर 'धे' या 'गे' वर्ण एक साथ बजाया जाता है तो 'धा' वर्ण की ध्वनि उत्पन्न होती है।	तबले के समान पखावज पर भी जब दाँये मुख पर ता या ना वर्ण तथा बाँये मुख पर 'धे' या 'गे' वर्ण का वादन एक साथ किया जाता है तो 'धा' वर्ण का निकास सम्भव होता है।
10. धिं—दाँये तबले पर तिं तथा बाये पर धे या गे वर्ण का एक साथ वादन करने से 'धिं' वर्ण की ध्वनि निकलेगी।	इस प्रकार पखावज के दाये मुख पर तथा बाँये मुख पर धे या गे वर्ण को एक साथ बजाने से 'धि' वर्ण की ध्वनि उत्पन्न होगी।
11. दित् या देत्-तेत्—दाहिने तबले की स्याही के किनार तथा लव के भाग पर मध्यमिका, अनामिका तथा कनिष्ठका इन तीन अँगुलियो को एक साथ मिलाकर बन्द प्रहार करने से दित्, देत् या तेत् वर्ण की ध्वनि उत्पन्न होती है।	तबले की तरह पखावज में भी दाँये मुख पर स्याही तथा लव के भाग पर हाथ की चारों अँगुलिया (तर्जनी, मध्यमिका, अनामिका, कनिष्ठका) को जोड़कर जब बन्द प्रहार करेंगे तो दित, देत् या तेत् वर्ण की ध्वनि निकलेगी।
12. धेत्—दाहिने तबले दित् या देत् वर्ण के साथ-साथ जब बाये पर 'ग' वर्ण एक साथ बजाया जाएगा तो धेत् वर्ण बजेगा।	तबले के समान पखावज में भी धेत् वर्ण के वादन हेतु पखावज के दाँये मुख पर दित् या देत् वर्ण के साथ जब बाये मुख पर ग वर्ण का वादन किया जायेगा तो धेत् वर्ण का वादन संभव हो सकेगा।

Scanned with CamScanner

तबला	पखावज
13. तत् या तक्—तबले में दाहिने भाग में स्याही के बीचो बीच तर्जनी को छोड़ कर शेष तीन अंगुलियों मध्यमिका, अनामिका, कनिष्ठका को जब अपनी ओर खींचते हुए बन्द प्रहार करेंगे तो तत् या तक् वर्ण निकलेगा।	पखावज में भी तबले की तरह ही दाये मुख पर जब मध्यमिका, अनामिका व कनिष्ठका इन तीन अँगुलियों को जोड़कर जब बन्द प्रहार किया जाएगा तो तत् या तक का वादन संभव होगा।

इन उपर्युक्त वर्णों के अलावा कई संयुक्त वर्ण तथा वर्ण समूह ऐसे हैं जिनमें एक से अधिक वर्णों का संयोग रहता है जैसे—क्ड़ान, ध्ड़ान, किड़धान् आदि ऐसे अनेक बोल समूह है जिनके निकास की विधि निश्चित वर्णानुसार होनी चाहिए किन्तु प्रस्तुतीकरण में सरलता की दृष्टि से उसमें अन्तर आना स्वाभाविक हो जाता है तथा कभी कभी हलन्त में आने वाले वर्णों का केवल ऑस द्वारा प्रत्यक्षीकरण होता है।

Scanned with CamScanner